+ नवभारत
छिंदवाड़ा, रविवार, 17 मई 2026

आध्यात्मिक ज्योतिष

कर्म और मानव विकास का समन्वित दर्शन

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

आध्यात्मिक ज्योतिष आत्मा की उस यात्रा का विज्ञान है जिसमें सीमित व्यक्तित्व धीरे-धीरे सार्वभौमिक चेतना में विलीन होता है. यह केवल भविष्य जानने का माध्यम नहीं, बल्कि आत्म-ज्ञान, आत्म-अनुशासन और ब्रह्माण्डीय सामंजस्य की आध्यात्मिक प्रक्रिया है. ग्रह, राशियाँ, चक्र, ध्यान और योग — ये सभी मिलकर मानव चेतना के विकास का वह महान मार्ग बनाते हैं जिसके माध्यम से मनुष्य बाहरी अंधकार से निकलकर आंतरिक प्रकाश की ओर अग्रसर होता है. यही आध्यात्मिक ज्योतिष का वास्तविक संदेश है.

आध्यात्मिक ज्योतिष मानव सभ्यता की उन प्राचीनतम ज्ञान-परंपराओं में से एक है जिसने मनुष्य को केवल बाह्य जगत को समझने का ही नहीं, बल्कि स्वयं अपने अस्तित्व को जानने का भी मार्ग प्रदान किया. सामान्यत: ज्योतिष को भविष्यवाणी, ग्रह-दशा अथवा शुभ-अशुभ घटनाओं की व्याख्या तक सीमित समझ लिया जाता है, किंतु वास्तविक आध्यात्मिक ज्योतिष इससे कहीं अधिक व्यापक और गहन विषय है. यह मनुष्य, प्रकृति और ब्रह्माण्ड के मध्य विद्यमान उस सूक्ष्म संबंध का अध्ययन है जिसके माध्यम से समस्त सृष्टि एक जीवित चेतना के रूप में कार्य करती है. प्राचीन भारतीय ऋषियों ने ज्योतिष को वेदों का नेत्र कहा, क्योंकि यह केवल समय की गणना करने वाली प्रणाली नहीं, बल्कि ब्रह्माण्डीय व्यवस्था को समझने का माध्यम भी है. आध्यात्मिक ज्योतिष का मूल आधार यह है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड चेतना का एक जीवित तंत्र है और मनुष्य उसी चेतना का सूक्ष्म प्रतिबिंब है.

भारतीय दार्शनिक परंपरा में 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे' का सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है. इसका अर्थ है कि जो कुछ इस विशाल ब्रह्माण्ड में विद्यमान है वही सूक्ष्म रूप में मनुष्य के भीतर भी उपस्थित है. आध्यात्मिक ज्योतिष इसी सिद्धांत को आधार बनाकर यह समझाने का प्रयास करती है कि ग्रह, राशियाँ, नक्षत्र और ब्रह्माण्डीय ऊर्जा केवल बाह्य आकाश में नहीं, बल्कि मानव चेतना के भीतर भी कार्यरत हैं. सूर्य आत्मा का प्रतीक है, चन्द्र मन का, पृथ्वी शरीर का, और ग्रह विभिन्न मानसिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं. इस दृष्टि से मनुष्य केवल जैविक प्राणी नहीं, बल्कि एक जीवित ब्रह्माण्ड है. उसका शरीर पृथ्वी से जुड़ा है, उसका मन चन्द्र से और उसकी आत्मा सूर्य से. जब मनुष्य इन तीनों के मध्य संतुलन स्थापित कर लेता है तब उसके जीवन में आध्यात्मिक जागरण प्रारंभ होता है.

आध्यात्मिक ज्योतिष का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह मनुष्य को भाग्यवाद की मानसिकता से मुक्त करती है. सामान्य ज्योतिष में ग्रहों को जीवन की घटनाओं का नियंता माना जाता है, जबकि आध्यात्मिक ज्योतिष ग्रहों को चेतना के सिद्धांतों के रूप में देखती है. ग्रह केवल घटनाओं को निर्धारित नहीं करते, बल्कि वे मनुष्य की आंतरिक प्रवृत्तियों, मानसिक अवस्थाओं और चेतना की दिशा को संकेतित करते हैं. यदि मनुष्य अज्ञान, भय, लोभ और इन्द्रिय-प्रधान जीवन में रहता है तो ग्रह उसके जीवन में संघर्ष, भ्रम और असंतुलन के रूप में प्रकट होते हैं. किंतु जब वही मनुष्य ध्यान, आत्म-अनुशासन, सेवा और साधना के मार्ग पर अग्रसर होता है तब ग्रह उसकी चेतना को ऊँचा उठाने वाले आध्यात्मिक साधन बन जाते हैं. इस प्रकार ग्रह भाग्य के दंडदाता नहीं, बल्कि चेतना-विकास के मार्गदर्शक हैं.

प्राचीन भारतीय ज्योतिष में सूर्य को केवल प्रकाश और ऊर्जा का स्रोत नहीं माना गया, बल्कि आत्मा और दिव्य चेतना का प्रतीक समझा गया है. सूर्य वह केंद्र है जिसके चारों ओर सम्पूर्ण सौरमंडल संचालित होता है. इसी प्रकार आत्मा भी मनुष्य के जीवन का केंद्रीय तत्व है. जब मनुष्य अपनी चेतना को बाहरी इच्छाओं से हटाकर आत्मिक प्रकाश की ओर ले जाता है तब उसका जीवन संतुलित होने लगता है. सूर्य आत्मविश्वास, आत्म-ज्ञान, आध्यात्मिक नेतृत्व और जीवन-ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है. वैदिक परंपरा में सूर्योपासना का महत्व इसी कारण अत्यधिक है, क्योंकि सूर्य केवल बाह्य प्रकाश ही नहीं, बल्कि आंतरिक ज्ञान का भी प्रतीक है. गायत्री मंत्र को भी इसी दिव्य सौर चेतना से जोड़ा गया है. सूर्य मनुष्य के भीतर स्थित उस दिव्य केंद्र का प्रतीक है जहाँ से आत्मिक ऊर्जा प्रवाहित होती है. यदि यह केंद्र जागृत हो जाए तो मनुष्य भय, असुरक्षा और मानसिक अंधकार से मुक्त होने लगता है.

चन्द्रमा आध्यात्मिक ज्योतिष में मन और भावनात्मक संसार का प्रतिनिधित्व करता है. मनुष्य का मानसिक संतुलन, स्मृति, स्वप्न, कल्पना और संवेदनशीलता चन्द्र से प्रभावित मानी जाती है. चन्द्र का स्वभाव परिवर्तनीय है, इसलिए मन भी स्थिर नहीं रहता. कभी प्रसन्नता, कभी भय, कभी आशा, कभी निराशा — ये सभी चन्द्र-प्रधान मानसिक अवस्थाएँ हैं. आध्यात्मिक दृष्टि से मनुष्य का सबसे बड़ा संघर्ष अपने मन पर नियंत्रण प्राप्त करना है. योग, ध्यान और प्राणायाम का उद्देश्य भी मन को स्थिर करना है ताकि आत्मा का प्रकाश उसमें स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित हो सके. यदि चन्द्र असंतुलित हो तो व्यक्ति मानसिक तनाव, भ्रम और अस्थिरता का अनुभव करता है, जबकि संतुलित चन्द्र व्यक्ति को संवेदनशीलता, करुणा और अंतर्ज्ञान प्रदान करता है. भारतीय योग परंपरा में मन को 'चंचल' कहा गया है, और ध्यान का उद्देश्य इसी चंचलता को शांत करना है. जब मन स्थिर होता है तब व्यक्ति अपने भीतर स्थित दिव्य चेतना का अनुभव कर सकता है.

मंगल शक्ति और ऊर्जा का ग्रह माना जाता है. आध्यात्मिक ज्योतिष में मंगल केवल युद्ध अथवा आक्रामकता का प्रतीक नहीं, बल्कि आंतरिक साहस और आत्मबल का प्रतिनिधित्व करता है. साधक के भीतर जो ऊर्जा उसे कठिनाइयों से संघर्ष करने और आत्म-विकास की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है, वही मंगल शक्ति है. यदि यह शक्ति अज्ञान के साथ जुड़ जाए तो हिंसा, क्रोध और विनाश उत्पन्न होते हैं, किंतु यदि यही शक्ति आध्यात्मिक अनुशासन के साथ जुड़ जाए तो तपस्या, साहस और आत्म-नियंत्रण का रूप ले लेती है. भारतीय तपस्वी परंपरा में जो अग्नि और तप का महत्व है, वह मंगल ऊर्जा की ही उच्च अवस्था है.

बुध बुद्धि, संवाद और ज्ञान की अभिव्यक्ति का ग्रह है. आध्यात्मिक स्तर पर बुध विवेक का प्रतिनिधित्व करता है. यह केवल तर्क और गणना तक सीमित नहीं, बल्कि सत्य और असत्य के मध्य अंतर करने की क्षमता प्रदान करता है. मनुष्य का मानसिक विकास तभी संभव है जब उसका बुध संतुलित हो. प्राचीन भारतीय परंपरा में गुरु-शिष्य संबंध और ज्ञान-परंपरा का महत्व बुध की इसी शक्ति से जुड़ा हुआ है. जब बुद्धि केवल स्वार्थ और भौतिक उपलब्धियों तक सीमित रहती है तो वह मनुष्य को अहंकार की ओर ले जाती है, किंतु जब वही बुद्धि विवेक और सत्य की खोज में लगती है तब वह आत्मिक जागरण का माध्यम बन जाती है.

पुरुषोत्तम मास आज से प्रारंभ

भगवान विष्णु की पूजा का विशेष महत्व

हिंदू धर्म में विशेष महत्व रखने वाला पुरुषोत्तम मास यानी अधिकमास 17 मई 2026 से शुरू हो रहा है. यह पवित्र महीना 15 जून 2026 तक चलेगा. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार यह महीना भगवान विष्णु को समर्पित होता है और इसे साधना, दान, जप-तप तथा आत्मशुद्धि का समय माना जाता है.

ज्योतिषाचार्यों के मुताबिक लगभग हर तीन साल में आने वाला अधिकमास हिंदू पंचांग और सौर गणना के संतुलन के लिए जोड़ा जाता है. इस दौरान शुभ और मांगलिक कार्यों से दूरी बनाकर आध्यात्मिक गतिविधियों पर जोर दिया जाता है. धार्मिक ग्रंथों में पुरुषोत्तम मास को अत्यंत पुण्यदायी बताया गया है. मान्यता है कि इस महीने में भगवान विष्णु की पूजा, विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ, गीता पाठ, दान और व्रत करने से कई गुना अधिक फल प्राप्त होता है. भक्त सुबह ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान कर पूजा-अर्चना करते हैं और मंदिरों में दर्शन के लिए पहुंचते हैं. पीले वस्त्र, तुलसी दल, दीपदान और गरीबों को अन्नदान करना विशेष फलदायी माना गया है. इस महीने में कुछ कार्यों को वर्जित भी माना गया है. धार्मिक मान्यता के अनुसार विवाह, गृह प्रवेश, मुंडन, नामकरण और नए व्यवसाय की शुरुआत जैसे मांगलिक कार्य पुरुषोत्तम मास में नहीं किए जाते. इसके अलावा तामसिक भोजन, क्रोध, झूठ और नकारात्मक विचारों से भी बचने की सलाह दी जाती है. विद्वानों का कहना है कि यह समय भौतिक सुखों से दूरी बनाकर आत्मचिंतन, भक्ति में समय लगाने का अवसर देता है.

ज्योतिष विशेषज्ञों के अनुसार पुरुषोत्तम मास में जरूरतमंदों की सहायता, गौसेवा, अन्नदान और धार्मिक पुस्तकों का पाठ बेहद शुभ माना जाता है. कई श्रद्धालु पूरे महीने व्रत रखकर भगवान विष्णु और श्रीकृष्ण की आराधना करते हैं. मान्यता है कि इस अवधि में किए गए पुण्य कर्म जीवन में सुख-समृद्धि और मानसिक शांति प्रदान करते हैं. धार्मिक ग्रंथों में तिल दान, घी दान, स्वर्ण दान और धार्मिक पुस्तकों के दान का भी उल्लेख मिलता है. इसके अलावा गायों को हरा चारा खिलाना, पक्षियों को दाना डालना और प्यासों को पानी पिलाना भी पुण्य कर्म माना गया है.

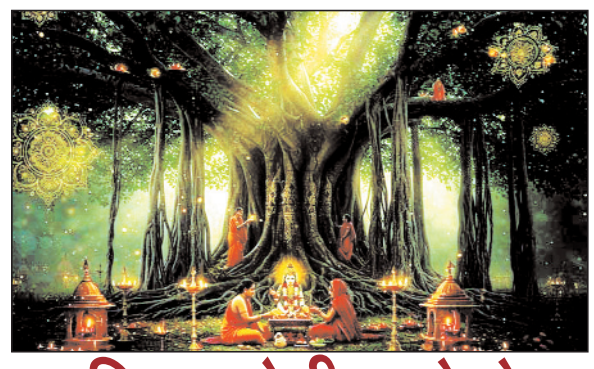

शनिवार को पीपल के पेड़ की पूजा करना क्यों है खास

हिंदू धर्म में पीपल के पेड़ को अत्यंत पवित्र और पूजनीय माना गया है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार पीपल में सभी देवी-देवताओं का वास होता है और इसकी पूजा करने से विशेष पुण्य प्राप्त होता है. खासतौर पर शनिवार के दिन पीपल पूजा का महत्व अधिक बताया गया है.

मान्यता है कि इस दिन पीपल के वृक्ष की पूजा करने और दीपक जलाने से शनिदेव प्रसन्न होते हैं तथा जीवन के कष्टों में कमी आती है. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जिन लोगों की कुंडली में शनि दोष, साढ़ेसाती या ढैय्या चल रही हो, उनके लिए शनिवार को पीपल पूजा लाभकारी मानी जाती है. धार्मिक मान्यता है कि पीपल के पेड़ में भगवान विष्णु और शनिदेव का विशेष वास होता है. इसलिए शनिवार को पीपल पर जल चढ़ाना, सरसों के तेल का दीपक जलाना और वृक्ष की परिक्रमा करना शुभ माना जाता है.

व्यक्ति को मानसिक शांति मिलती है. कई श्रद्धालु शनिवार की सुबह स्नान के बाद पीपल के वृक्ष पर जल अर्पित करते हैं और शाम के समय दीपदान करते हैं. मान्यता है कि ऐसा करने से आर्थिक परेशानियां कम होती हैं और घर में सुख-समृद्धि बनी रहती है.

धर्माचार्यों के अनुसार पीपल के नीचे बैठकर भगवान विष्णु या शनिदेव के मंत्रों का जाप करना भी फलदायी माना गया है. 'शं शनैश्चराय नम:' मंत्र का जाप विशेष रूप से शुभ बताया जाता है. इसके अलावा जरूरतमंदों को दान देना और गरीबों की सहायता करना भी शनिवार के दिन पुण्यदायी माना गया है. धार्मिक महत्व के साथ-साथ पीपल का वैज्ञानिक महत्व भी बताया जाता है.

पूजा में घंटी बजाने के चमत्कारी फायदे

हिंदू धर्म में पूजा-पाठ के दौरान घंटी बजाने की परंपरा सदियों पुरानी मानी जाती है. मंदिरों से लेकर घरों के पूजा स्थल तक आरती और पूजा के समय घंटी जरूर बजाई जाती है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार घंटी की ध्वनि वातावरण को पवित्र बनाती है और नकारात्मक ऊर्जा को दूर करती है. यही वजह है कि किसी भी शुभ कार्य या पूजा की शुरुआत घंटी बजाकर की जाती है.

धर्मशास्त्रों में बताया गया है कि घंटी की मधुर ध्वनि देवी-देवताओं को प्रिय होती है. मान्यता है कि पूजा के दौरान घंटी बजाने से देवताओं का आह्वान होता है और घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार बढ़ता है. कई लोग मानते हैं कि घंटी की आवाज से मन एकाग्र होता है और पूजा में ध्यान लगाने में आसानी होती है. ज्योतिषाचार्यों के अनुसार सुबह पूजा में घंटी बजाने से घर का वातावरण शुद्ध होता है और नकारात्मक शक्तियां दूर रहती हैं. माना जाता है कि घंटी की ध्वनि से उत्पन्न कंपन आसपास की नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त करने में मदद करते हैं. यही कारण है कि मंदिरों में बड़ी घंटियां लगाई जाती हैं, जिनकी आवाज दूर तक सुनाई देती है.

विशेषज्ञों के अनुसार घंटी की ध्वनि से उत्पन्न कंपन वातावरण में मौजूद कई प्रकार के सूक्ष्म जीवाणुओं को कम करने में सहायक हो सकते हैं. इसके अलावा घंटी की आवाज दिमाग को शांत करने और मानसिक तनाव कम करने में भी मदद करती है.

गृह प्रवेश से पहले वास्तु देव पूजन को माना जाता है अत्यंत शुभ

भारतीय संस्कृति में नया घर केवल रहने की जगह नहीं, बल्कि परिवार की खुशियों, सपनों और भविष्य का प्रतीक माना जाता है. यही कारण है कि नए घर में प्रवेश करने से पहले वास्तु देव पूजन और शुभ मुहूर्त का विशेष ध्यान रखा जाता है. ज्योतिष और वास्तु शास्त्र के अनुसार यदि गृह प्रवेश सही विधि और शुभ समय पर किया जाए तो घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और परिवार के सदस्यों के जीवन में सुख-समृद्धि बनी रहती है.

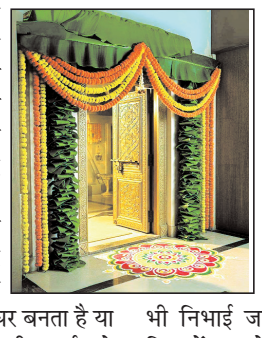

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार हर स्थान पर किसी न किसी ऊर्जा का प्रभाव होता है. जब नया घर बनता है या खरीदा जाता है तो वहां की ऊर्जा को संतुलित करने और शुभता बढ़ाने के लिए वास्तु देवता की पूजा की जाती है. माना जाता है कि वास्तु देव पूजन करने से घर में मौजूद नकारात्मक प्रभाव समाप्त होते हैं और सुख, शांति व समृद्धि का आगमन होता है.

ज्योतिषाचार्यों के अनुसार गृह प्रवेश के लिए शुभ मुहूर्त का चयन बेहद जरूरी माना जाता है. पंचांग देखकर तिथि, वार, नक्षत्र और ग्रहों की स्थिति के आधार पर मुहूर्त निकाला जाता है. मान्यता है कि शुभ समय में नए घर में प्रवेश करने से परिवार को आर्थिक उन्नति, स्वास्थ्य लाभ और मानसिक शांति प्राप्त होती है. वहीं बिना मुहूर्त के गृह प्रवेश करने से कई बार बाधाओं और तनाव का सामना करना पड़ सकता है.

गृह प्रवेश के दौरान कलश स्थापना, गणेश पूजन, हवन और दूध उबालने जैसी परंपराएं भी निभाई जाती हैं. इन सभी रीति-रिवाजों का उद्देश्य घर के वातावरण को पवित्र और सकारात्मक बनाना होता है. विशेष रूप से भगवान गणेश की पूजा को विघ्नों को दूर करने वाला माना गया है. वहीं हवन से वातावरण शुद्ध होता है और धार्मिक दृष्टि से इसे शुभ माना जाता है.

जानिए क्यों अन्नदान को कहा जाता है सबसे श्रेष्ठ दान

भारतीय संस्कृति में दान को अत्यंत पुण्य का कार्य माना गया है, लेकिन इनमें भी अन्नदान को सबसे श्रेष्ठ दान का दर्जा दिया गया है. शास्त्रों और पुराणों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि 'अन्नदानं महादानम्', यानी भोजन का दान सबसे बड़ा दान है. इसका कारण यह है कि भूख केवल शारीरिक आवश्यकता नहीं, बल्कि जीवन की सबसे बुनियादी जरूरत है.

अन्नदान का महत्व केवल धार्मिक दृष्टि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानवता और करुणा का भी प्रतीक माना जाता है. जब कोई व्यक्ति भूखे को भोजन कराता है, तो वह केवल पेट नहीं भरता, बल्कि उसके जीवन की एक बड़ी पीड़ा को भी समाप्त करता है. यही वजह है कि इसे सभी दानों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है.

हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार अन्नदान करने से व्यक्ति को अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है. माना जाता है कि जो व्यक्ति भूखे को भोजन कराता है, उसे देवताओं का आशीर्वाद मिलता है. कई ग्रंथों में यह भी कहा गया है कि अन्नदान करने से पूर्वज भी प्रसन्न होते हैं और परिवार में सुख-समृद्धि बनी रहती है.

पौराणिक मान्यताओं में यह भी उल्लेख मिलता है कि अन्नदान सीधे ईश्वर तक पहुंचने वाला कार्य है, क्योंकि भूखे व्यक्ति में स्वयं भगवान का रूप देखा जाता है. इसी कारण मंदिरों, धार्मिक स्थलों और भंडारों में अन्नदान की परंपरा सदियों से चली आ रही है.

वैज्ञानिक और मानवीय दृष्टिकोण- वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो भोजन मानव शरीर की सबसे मूलभूत आवश्यकता है. बिना भोजन के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती. इसलिए जब किसी की भूख मिटाई जाती है, तो यह केवल एक दान नहीं बल्कि जीवनदान के बराबर माना जाता है. मानवीय दृष्टि से भी अन्नदान व्यक्ति के भीतर करुणा और संवेदनशीलता को बढ़ाता है. यह समाज में 'साझा भलाई' की भावना को मजबूत करता है और लोगों को एक-दूसरे के करीब लाता है.

सामाजिक दृष्टिकोण से महत्व- अन्नदान केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी भी है. आज भी समाज में कई ऐसे लोग हैं जिन्हें दो वक्त का भोजन मिलना मुश्किल होता है. ऐसे में अन्नदान उनकी जिंदगी में उम्मीद और सहारा बनता है.

राशिफल

दिनांक- 17 से 23 मई 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य वृषभ राशि में, मंगल मेष राशि में, बुध वृषभ राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र मिथुन राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा वृषभ मिथुन कर्क और सिंह राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 19 को रोहिणीयां बुध के प्रभाव से सोना, चांदी, सूत, कपास, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड, खांड में तेजी का रूख रहेगा, रेशम, रूई, घी में तेजी आकर बाद में मंदी आएगी. उत्तरी भारत में आंधी तूफान के साथ कहीं खण्ड वृष्टि सम्भव है. मुम्बई सैन्ट्रल, आसाम, तिरूवनन्तपुरम, उडीसा, बिहार, भूटान, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, हिन्द प्रान्त तथा कश्मीर के कुछ भागों में वायु वेग के साथ बादल चाल के योग हैं.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	17 मई को	अधिक मास प्रारम्भ,
बुधवार	20 मई को	विनायकी गणेश चतुर्थी व्रत,

मेष

इच्छित सफलता के लिये कार्य योजना में बदलाव संभव है, प्रापर्टी के कारोबार में अच्छा लाभ मिलेगा, व्यापारी आयात निर्यात के बारोबार की शुरूआत कर सकते हैं, आप अतिरिक्त जिम्मेदारी को आसानी से निभा लेंगे, सप्ताह के शुरूआत में आप भ्रमण की स्थिति में रहेंगे, परन्तु धीरे धीरे आप नये आयामों की ओर बढ़ेंगे. वित्तीय स्थिति से संतुष्ट रहेंगे.

वृषभ

अपने आसपास का माहौल खुशनुमा पायेंगे, मेहमानबाजी में आनन्द महसूस करेंगे, आफिस में आपके खुले विचारों को कोई पसंद नहीं करेगा, अतीत से वर्तमान के साथ सामंजस्य बैठाने की कोशिश करेंगे, व्यवसाय में सावधानी बरतें, आपसी संबंधों में अनदेखी न करें, संतान की उन्नति होगी, गुमी वस्तु मिलने का योग है.

मिथुन

आप अपने लक्ष्य को हासिल करने में सफल रहेंगे, घर के सदस्यों के स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ेगा. आस पड़ौस या रिश्तेदारों के साथ संबंध सुधरेंगे, शेयर में धन निवेश से परहेज करें, सप्ताह में व्यवसाय व्यापार के विस्तार की संभावना बनती है, मेल मुलाकात उपयोगी रहेगी, अधिनस्थ आपका सहयोग करेंगे.

कर्क

कार्य क्षेत्र में आपको प्रतिभा दिखाने का बेहतर अवसर मिलेगा. आपको उत्तराधिकार का अवसर मिल सकता है, उदारता पर अंकुश रखे तो राहत मिलेगी. छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी, सप्ताह में किसी रिश्तेदार से सुखद समाचार मिलेगा कामकाजी महिलाओं को परेशानी होगी, जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी.

सिंह

परिस्थिति के अनुकूल विनम्रता अच्छी सफलता दिला सकती है, बहसबाजी और मुंह पर बोलने की आदत पर रोक लगायें, कार्य और व्यापार को सिर्फ धन कमाने का साधन ही नहीं समझें, बल्कि प्रतिष्ठा का आधार भी मानें, सामाजिक जिम्मेदारी अच्छे से निभायेंगे,परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, कार्यक्षेत्र में प्रभावशाली सिद्ध होंगे.

कन्या

आपको कठिन प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा, निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिये अधिकारी दबाव बना सकते हैं, पद प्रतिष्ठा प्राप्ति का योग है, पारिवारिक जीवन में प्रेम आनन्द की अनुभूति मिलेगी, सप्ताह के मध्य विपरीत परिस्थिति से डटकर मुकाबला करना पड़ेगा, आप सही और गलत के बीच उलझ सकते हैं, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

तुला

पहिले से चले आ रहे कार्य जारी रहेंगे, नये कार्यों में हाथ न डालें, लंबे समय से जिस सफलता की उम्मीद कर रहे हैं, वह मिलेगी, कार्यक्षेत्र में आपको विरोधियों का सामना करना पड़ेगा. जोड़ों का दर्द, बुखार आदि से परेशानी हो सकती है, पारिवारिक कार्यो में सफलता मिलेगी. भावनात्मक संबंधों में निकटता आयेगी, प्रापर्टी से अच्छा लाभ मिलेगा.

वृश्चिक

कुछ अच्छे दोस्त बन सकते हैं, जो आगे आपकी मदद कर सकते हैं, घरेलू कार्यो को जिम्मेदारी से करें, टालमटोल की प्रवृत्ति का परिणाम हानिप्रद हो सकता है, घरेलू माहौल खुशनुमा रहेगा, सप्ताह के मध्य बढ़ते हुये खर्च सामने आयेंगे, व्यापार की कार्य योजना का विस्तार होगा, अधिक जल्दबाजी से निर्णय न करना हितकर रहेगा, सत्संग में रूचि बढ़ेगी.

धनु

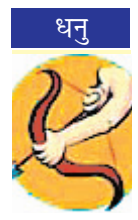

यदि आप अस्वस्थ्य और कमजोर हैं, तो स्वास्थ्य में सुधार होगा, नये पार्टनरशिप के साथ कार्य के लिये समय अनुकूल है, अपने कार्य की क्षमता को पहचानकर कार्य करें, घरेलू मामलों के लिये सप्ताह अच्छा है,आप अपने से जुड़े लोगों के साथ संवाद बनाये रखें, सप्ताह के उत्तरार्ध में भाग्य साथ देगा, लक्ष्य की प्राप्ति के लिये आपको अत्याधिक खर्च और परिश्रम करना पड़ेगा.

मकर

आपके अधिकारी व शुभचिन्तक धन कमाने में आपकी सहायता करेंगे, व्यापार से जुड़े लोग बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं, घरेलू आयोजन आनन्ददायक रहेगा, सकारात्मक दृष्टिकोण आपको सफलता दिलायेगा, कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी, आमदानी में वृद्धि होगी, जीवनसाथी की अपेक्षायें बढ़ेंगी, माता पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

कुम्भ

अकेले काम का बोझ उठा लेने से आपको नुकसान हो सकता है, अपने सहकर्मियों या अधिनस्थों के कारण कुछ परेशानी हो सकती है, नये कारोबार की शुरूआत ठीक रहेगी, पुरानी गलती को सुधारकर आगे बढ़ें, जीवन आसान हो जायेगा, कार्यक्षेत्र में आप मुश्किलों का डटकर सामना करेंगे, सप्ताह में आपको अपने प्रयासों में अच्छी सफलता मिलेगी.

मीन

इस सप्ताह सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे, अपने घर में आप निर्माण संबंधी कोई सुधार कर सकते हैं, पुराना घर बेचकर नया घर खरीदने पर विचार होगा. अविवाहितों को मनचाहा जीवनसाथी मिल सकता है, धार्मिक यात्रा होगी, छात्रों को कई मुश्किलों का सामना हो सकता है, व्यवसायिक वर्ग को नये अनुबंधों में शामिल होने के पहले गंभीरता से विचार करना चाहिये.